पूर्व राज्यपाल श्री पट्टाभिसीता रमैया का भाषण

18 दिसम्बर 1956

आप यहां एक ऐतिहासिक अवसर पर एकत्रित हुए हैं। अधिकांशतः इस शब्द का उपयोग अत्यधिक होता रहा है। किन्तु इस अवसर पर इस शब्द के उपयोग के औचित्य पर कोई भी शंका नहीं कर सकता। जैसा कि राष्ट्रपति महोदय ने कहा था नये राज्यों का निर्माण जिनमें मध्यप्रदेश भी सम्मिलित है राष्ट्र की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है जिसे हमारे इतिहास में उचित स्थान प्राप्त होगा। इस अवसरको लाने में व्यक्तिगत रूप से हमारा योगदान चाहे कितना ही कम क्यों न हो तथापि हम सब यह संतोष अनुभव कर सकते हैं कि बहुत अंशों में देश की शान्तिपूर्ण परम्पराओं के अनुसार ही यह महान परिवर्तन घटित हुआ है।

इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं, भोपाल नगर में जहां आप अभी तथा भविष्य में विचार-विनिमय करेंगे आपका स्वागत करता हूँ इस नगर में जैसा कि आपने देखा होगा फिर चाहे आपका यह अनुभव अल्पकालिक ही क्यों न हो, प्रकृति ने अपने वरदहस्तों से इतने वरदान दिये हैं जो कहीं और किंचित ही देखने मिलते हैं। किन्तु इसके साथ ही अतीत की किसी भी प्रकार अवहेलना न करत हुए कोई भी यह कह सकता है कि विशेषतः भारत के दूसरे सबसे बड़े राज्य की आधुनिक प्रशासनिक आवश्यकताओं को देखते हुए यहां मानव द्वारा संपन्न निर्माण कार्य अपूर्ण है। अतः मेरे शासन ने यह निॅचय किया है कि नये भोपाल के निर्माण की योजना तथा वर्तमान नगर के सुधार इन दोनों को ही उच्च प्राथमिकता प्रदान की जावे। तद्नुसार प्रशासन तथा नगर-आयोजन टेक्नालाती के विशेषज्ञों की एक नगर-निवेश तथा सुधार-समिति भोपाल में स्थापित की गई है। आशा की जाती है कि अति शीघ्र ही शासन को इस समिति का प्रतिवेदन प्राप्त हो जावेगा। मेरे शासन को यह पूरी आशा है कि इस समिति के परिश्रम तथा इसकी सिफारिशों को मूर्त रूप प्रदान करने में सहायक अन्य लोगों के प्रयासों के फलस्वरूप जो चित्र प्रस्तुत होगा वह इस राज्य की जनता तथा उन लोगों के योग्य ही होगा जिन्हें पुनर्गणन के पॅचात शीघ्र ही प्रशासन का उत्तरदायित्व सौंपा गया था।

डॉ. बी.पट्टाभि सीतारामैया जैसा कि आपको विदित है इस नये राज्य के निर्माण में पांच विभिन्न भूतपूर्व प्रशासनिक इकाइयां जिनमें से कुछ तो बड़ी थीं तथा कुछ अपेक्षाकृत छोटी पूर्ण रूपेण

vkj dN v'krh foyhu gb g budh ç'kklfud ç.kkyh] ;|fi vk/kkjHkr :i l fHké u Fkh] ijUr fQj Hkh çR;d dh iFkd&iFkd fo'k"krk; FkÈ tk fd mudh lokvk d xBu rFk mud LFkkuh; dkuuk e Li"V ifjyf{kr gkrh FkÈA pfd ;g vko';d g fd bu Hknk dk U;ure d fn;k tk;] ejk 'kklu lokvk rFkk lkFk gh dkuuk d Hkh ,dhdj.k gr ,d mfpr lxBu dh LFkkiuk ij fopkj dj jgk gA lkekU; ç'kklu foHkkx e ,dhdj.k 'kk[kk d fuek.k d :i e bl fn'kk e igyk dne mBk;k tk pdk gA ;g 'kk[kk ,d ofj"B vf/kdkjh d v/khu j[kh xb g ftud in dk uke fo'k"k lfpo gA ;g ,d ,lh leL;k tk fd lHkh u; jkT;k ij ykx gkrh g rFkk jkT; iuxBu vf/kfu;e e rRlc/kh dh xb fo'k"k 0;oLFkkvk l bl leL;k dh eg kk Li"V gk tkrh gA dkuuk e ,dhdj.k d lc/k e ej 'kklu u ;g fuÜp; fd;k g fd jktLo] fo k rFkk dj lc/kh dkuuk d ,dhdj.k rFkk leUo; dk dke igy gkFk e fy;k tkoA

ftu fo"k;k dh vHkh eu ppk dh g] mud ckn 'kkfUr ,o lj{kk dh leL;k egRoi.k g] tk jkT; d fuek.k l vfoNé :i l lcf/kr gA ioorh e/;çn'k] ioorh foU/;çn'k rFkk ioorh e/;Hkkjr d Hkkxk e Mdrk u viuk dk; tkjh j[kk gA iuxBu d io bl le:k d çHkkoi.k gy d fy, ge ykxk u bl {k=k d fy, lxfBr ifyl luk j[ku d lc/k e çk;% lkpk FkkA iuxBu d QyLo:i o lHkh {k= ,d 'kklu d vrxr vk x; g] ftll leL;k dh 0;kidrk dN v'kk rd de gk xb gA i.k:i.k ijh{k.k d mijkUr ejh ljdkj u fu.k; fd;k g fd doy 'kkfUr ,o l{kk d {k= e gh ugÈ lkekftd ,o vkfFkd {k= e leku :i l dk; djd bl leL;k ij dkc ik;k tkuk pkfg,A